अप्रैल, 2024 , वर्ष : 45 अंक : 04

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

परमपावन दलाई लामा अपने निवास स्थान धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत में बुद्ध के अवशेष अर्पित करने आए प्रतिनिधिमंडल से मिलते हुए

मूल्य :10 रू , वार्षिक : 100 रू

अप्रैल, 2024 , वर्ष : 45 अंक : 04

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

उपसभापति ने आईसीटी बोर्ड के सदस्य स्टीव श्रोएडर से मुलाकात की

प्रधान संपादक
ताशी देकि

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
मिग्मार छमचो

वितरण प्रबंधक
नावांग छोडेंन

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

- बुद्ध के अवशेषों की भेंट 1
- परम पावन दलाई लामा ने ताइवान के भूकंप पीड़ितों के प्रति एकजुटता जताई 2
- पूर्व तिब्बती राजनीतिक कैदी नामक्यी ने प्रेस कांफ्रेंस में अपने अनुभव सुनाए 3
- चीन ने भिक्षुओं को दलाई लामा के निधन के बाद नहीं करने वाले विधानों की सूची थमाई 4
- तिब्बती राजनीतिक कैदियों का विवरण - जांगचुप ग्योदुप 5
- तिब्बती राजनीतिक कैदियों का विवरण - रोंग्वो गेंडुन ल्हुंदुप 6
- केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने परम पवित्र ११वें पंचेन रिनपोछे का ३५वां जन्मदिन मनाया 7
- हिमालयी क्षेत्र के बौद्ध नेताओं ने ११वें पंचेन लामा के ठिकाने का मुद्दा उठाने के लिए संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस की 8
- एस्टोनियाई संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने प्रेस कांफ्रेंस कर ११वें पंचेन लामा की स्थिति पर चिंता प्रकट की 9
- यूरोपीय संसद में 'यूरोप फॉर तिब्बत' अभियान का आगाज 10
- अमेरिकी सीनेट की विदेश मामले संबंधी समिति ने तिब्बत समाधान विधेयक को मंजूरी दी, समिति अध्यक्ष ने सीनेट में विधेयक को पारित कराने में अपने समर्थन का आश्वासन दिया। 11
- मेक्सिको के सांसदों के समूह और 'फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत' ने तिब्बत के अधिकारों के लिए अभियान चलाने की रणनीति बनाने और अपने दृढ़ समर्पण को दोहराते हुए बैठक की। 12

समाचार -

- अर्जिया रिनपोछे ने तिब्बत में धार्मिक उत्पीड़न के बारे में जापानी सांसदों को बताया 13
- तिब्बत-मंगोल संबंधों पर पहला सम्मेलन भविष्य के सहयोग के वादों के साथ सफलतापूर्वक संपन्न 14
- डिप्टी स्पीकर ने आईसीटी बोर्ड के सदस्य स्टीव श्रोएडर से मुलाकात की 15
- सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने तिब्बती धार्मिक केंद्रों को परम पावन १४वें दलाई लामा के पुनर्जन्म पर संकल्प अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया 16
- स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल ने अयोध्या के राम मंदिर में दर्शन किया 17
- ओंटारियो संसद ने तिब्बती नेता सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का स्वागत किया 18
- सिक्योंग ने ज्यूरिख में तिब्बती समुदाय को संबोधित किया, चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता की हालिया टिप्पणी को खारिज किया 19
- बेल्जियम की संघीय संसद ने पंचेन लामा की तत्काल रिहाई का आह्वान किया 20
- स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल लामा लोबजांग की शोकसभा में शामिल हुए 21

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा
नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट

coordinator@indiatibet.net

◆ पंचेन लामा गेदुन छ्युकी न्यीमा की रिहाई की जोरदार मांग

दसवें पंचेन लामा के अवतार अर्थात् ग्यारहवें पंचेन लामा गेदुन छ्युकी न्यीमा का साम्यवादी चीन द्वारा अपहरण निंदनीय है। पंचेन लामा का अपहरण उनके परिजन-गुरुजन सहित हुआ है। चीन सरकार इनमें से किसी के बारे में कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं दे रही है। इनमें से किसी की अब तक रिहाई नहीं हुई है। इससे सभी तिब्बती एवं तिब्बत समर्थक चिंतित और बेचैन हैं। उनकी मांग है कि चीन सरकार इस विषय में सम्पूर्ण प्रामाणिक तथ्य उपलब्ध कराये तथा पंचेन लामा को उनके परिजन-गुरुजन सहित रिहा करे। विष्व के सभी लोकतांत्रिक संगठनों एवं सरकारों से इस हेतु चीन सरकार पर प्रभावी दबाव डालने की अपील की गई है।

तिब्बती समुदाय एवं तिब्बत समर्थक संगठनों द्वारा गत 25 अप्रैल, 2024 को व्यक्त ये सभी विचार स्वागतयोग्य हैं। ग्यारहवें पंचेन लामा के पैतीसवें जन्म दिन पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में चीन सरकार से यह भी अपील की गई कि वह तिब्बत की धार्मिक परंपराओं में अनावष्यक हस्तक्षेप बंद करे। तिब्बती धार्मिक परंपराओं की व्याख्या करने तथा तत्संबंधी निर्णय लेने का अधिकार सिर्फ तिब्बती धर्मगुरुओं तथा विद्वानों को है। इस क्षेत्र में चीनी हस्तक्षेप निंदनीय और अस्वीकार्य है।

चीन सरकार द्वारा ग्यारहवें पंचेन लामा का दुर्भाग्यपूर्ण अपहरण उनके परिजन-गुरुजन सहित 17 मई, 1995 को किया गया था। तब पंचेन लामा की उम्र सिर्फ छः वर्ष थी। बौद्ध धर्मगुरु परमपावन दलाई लामा ने 14 मई, 1995 को दसवें पंचेन लामा का अवतार गेदुन छ्युकी न्यीमा को घोषित किया था। इसके लिये चयन की परंपरागत प्रक्रिया को अपनाया गया था। चीन सरकार ने दलाई लामा द्वारा चयनित-घोषित पंचेन लामा के प्रति अपमानजनक व्यवहार करते हेतु उनके माँ-बाप तथा गुरुजी का भी अपहरण कर लिया। उसने पंचेन लामा का अपहरण कर एक अन्य व्यक्ति को पंचेन लामा घोषित कर दिया।

पंचेन लामा के पैंतीसवें जन्मदिन पर आयोजित कार्यक्रमों में निर्वासित तिब्बत सरकार का कार्यक्रम और भी महत्वपूर्ण रहा। इसमें हिमालय क्षेत्र के कई आध्यात्मिक गुरुओं तथा इस्टोनिया के संसदीय प्रतिनिधिमंडल की सहभागिता से स्पष्ट हो गया कि पंचेन लामा के अपहरण का सवाल एक अंतरराष्ट्रीय सवाल बन चुका है। हिमाचल प्रदेष में कांगड़ा जिले की धर्मषाला से संचालित निर्वासित तिब्बत सरकार वास्तव में लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित सरकार है। तिब्बत में जारी अवैध चीनी आधिपत्य के कारण यह सरकार "निर्वासित" समझी जाती है। इसके कार्यक्रम में पंचेन लामा के अच्छे स्वास्थ्य हेतु प्रार्थना की गई और विष्वास प्रकट किया गया कि विष्व समुदाय के रचनात्मक सहयोग से पंचेन लामा संबंधी प्रकरण का निपटारा यथाषीघ्र हो जायेगा।

चीन सरकार कर्मापा लामा एवं दलाई लामा के मामले में भी अनावष्यक हस्तक्षेप कर रही है। वर्तमान सत्रहवें कर्मापा लामा ओग्येन त्रिन्ले दोर्जे को चीनी अत्याचार से बचने के लिये अपने अनुयायिओं के साथ छिपकर भारत आना पड़ा। ऐसा नहीं होने पर कर्मापा लामा जी की स्थिति भी शायद पंचेन लामा वाली ही होती। इस दृष्टि से वर्तमान दलाई लामा तेंजिन ग्यात्सो द्वारा तिब्बत से भारत आने का निर्णय भी पूर्णतः उचित था। अभी ग्यारहवें पंचेन लामा, चैदहवें दलाई लामा तथा सत्रहवें कर्मापा लामा सम्पूर्ण तिब्बती समुदाय में परमपावन धर्मगुरु हैं। साम्राज्यवादी चीन सरकार बौद्ध दर्षन के इन तीनों महत्वपूर्ण धार्मिक पदों को हथियाना चाहती है। उसने दलाई लामा के नये अवतार को घोषित करने की साजिष अभी से प्रारम्भ कर दी है।

तिब्बत का पड़ोसी होने तथा उसकी गुरुभूमि होने के कारण भारत को सदैव सतकर्तापूर्ण भूमिका निभानी है। भारत से ही बौद्ध दर्षन तिब्बत गया था। वहाँ बौद्ध परंपरा पर चीनी आघात से भारतीय बौद्ध दर्षन पर आघात होगा। भारतीय आध्यात्मिक-सांस्कृतिक परंपरा को मजबूत रखने के लिये तिब्बती संघर्ष में सक्रिय सहयोग करना हमारा लोकतांत्रिक-आध्यात्मिक कर्तव्य है। तिब्बत पर साम्राज्यवादी चीन के नियंत्रण से भारतीय शांति-सुरक्षा-समृद्धि-स्वाभिमान खतरे में है।

उपनिवेषवादी चीन सरकार ऐतिहासिक प्रमाणों को विकृत कर तिब्बत को चीन का अंग बता रही है। चीन ने 820 ई. में स्वतंत्र तिब्बत के साथ अनाक्रमण एवं अनाधिपत्य समझौता किया था। ब्रिटेन ने 1904 में तिब्बत के साथ समझौता किया था। चीन ने 1909 में तिब्बत पर अवैध नियंत्रण किया था लेकिन 1911 में ही तिब्बत पुनः स्वतंत्र हो गया। साम्यवादी चीन ने फिर से 1959 में स्वतंत्र तिब्बत पर कब्जा कर लिया। इन ऐतिहासिक तथ्यों से स्पष्ट है कि भारत एवं चीन के बीच स्थित तिब्बत एक स्वतंत्र देष था। तत्कालीन नेहरू सरकार ने ऐतिहासिक प्रमाणों की उपेक्षा कर तिब्बत को चीन का अभिन्न अंग मान लिया था।

तिब्बत पर चीनी आधिपत्य के कारण ही भारत-चीन विवाद है। भारत का बड़ा भूभाग चीन के अवैध नियन्त्रण में है। चीन सरकार भारत के कई भूभागों को अपना बता रही है। भारत को अपमानित तथा कमजोर करने के लिये वह साजिषपूर्ण भारत की घेराबंदी कर रही है। भारत में सक्रिय अलगाववादी-आतंकवादी गिरोहों को चीन से शस्त्रास्त्र, प्रषिक्षण तथा आर्थिक मदद की प्राप्ति हो रही है। कई भारतीय मीडिया समूह तथा राजनेता भी चीन के पक्ष में सक्रिय रहते हैं। ये भारत में चीन के टूलकिट तथा स्लीपर सेल की तरह क्रियाषील हैं। भारत विरोधी चीन सरकार की गतिविधि पर रोक लगाने के लिये तिब्बत समस्या का हल आवष्यक है। इन तथ्यों के अनुरूप भारत सरकार पंचेन लामा के प्रकरण में तिब्बती संघर्ष का खुलकर साथ दे।

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खेतड़ी (राजस्थान)

मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

◆ एक : परम पावन दलाई लामा से संबंधित समाचार

◆ १. बुद्ध के अवशेषों की भेंट

थेकचेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। श्रीलंकाई बौद्धों के एक समूह की लंबे समय से चली आ रही महत्वाकांक्षा आज पूरी हो गई। इस समूह का नेतृत्व अमरपुरा संबुद्ध सासनोदय महा निकाय के प्रमुख परम आदरणीय डॉ. वास्काडुवे महिंदावांसा महा नायक थेरो और संयोजन श्रीलंका में श्रीलंका-तिब्बती बौद्ध ब्रदरहुड के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. दामेंडा पोरेज द्वारा किया गया।

◆ २. परम पावन दलाई लामा ने ताइवान के भूकंप पीड़ितों के प्रति एकजुटता जताई

थेकचेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। परम पावन दलाई लामा ने आज सुबह ताइवान के पूर्वी तट पर एक शक्तिशाली भूकंप से जानमाल की हानि और संपत्ति और मूलभूत सुविधाओं के व्यापक विनाश के बारे में जानकर दुख व्यक्त किया। उन्होंने चीनी गणराज्य- ताइवान के राष्ट्रपति छाई इंग-वेन को पत्र लिखकर पीड़ितों के प्रति संवेदना व्यक्त की।

उन्होंने लिखा, 'मैं उन लोगों के लिए प्रार्थना करता हूं जिन्होंने अपनी जान गंवाई है। साथ ही उन कई लोगों के लिए भी प्रार्थना कर रहा हूं, जिन्होंने इस प्राकृतिक आपदा के परिणामस्वरूप घायल हुए हैं। मैं महामहिम और इस त्रासदी से प्रभावित सभी लोगों के परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं।'

'मैं आपकी सरकार और उसकी संबंधित एजेंसियों की त्वरित प्रतिक्रिया के लिए सराहना करता हूं क्योंकि वे घायलों को बचाने और उन लोगों को राहत प्रदान करने का प्रयास कर रहे हैं जिन्हें मदद की ज़रूरत है।'

परम पावन ने अपना पत्र 'मेरी प्रार्थनाओं के साथ' समाप्त किया।

दो : तिब्बत के अंदर की स्थिति

◆ ३. पूर्व तिब्बती राजनीतिक कैदी नामक्यी ने प्रेस कांफ्रेंस में अपने अनुभव सुनाए

धर्मशाला। तिब्बत से हाल ही में आई पूर्व राजनीतिक कैदी नामक्यी ने तिब्बत में गंभीर स्थिति के बारे में अपने अनुभवों को सुनाया। इसमें उन्होंने अपने गृहनगर में अपने विरोध की घटनाओं, चीनी जेल में कैद के दौरान सहन की गई कठिनाइयों, रिहा होने के बाद निर्वासन में भागने आदि का वर्णन किया है।

नामक्यी ने अपने संबोधन में बताया, 'मेरा जन्म तिब्बत के न्गाबा काउंटी के चारो गांव में पेमा ल्हाथांग के एक विशिष्ट खानाबदोश परिवार में हुआ। कई अन्य खानाबदोश बच्चों की तरह मुझे भी स्कूल जाने का अवसर नहीं मिला और मेरा बचपन खानाबदोश के रूप में ही बीता। मैं अपने माता-पिता और बुजुर्गों से तिब्बत के इतिहास के बारे में सुनते हुए बड़ी हुई। इन इतिहास की कहानियों में था कि 'लाल चीन' ने उस तिब्बत पर जबरन कब्जा कर लिया और हजारों तिब्बतियों को मार डाला, जिसका नेतृत्व आध्यात्मिक नेता परम पावन दलाई लामा, परम पवित्र कीर्ति रिनपोछे और अन्य महान हस्तियों ने किया। इन हस्तियों को बाद में निर्वासन में शरण लेनी पड़ी। यह सब सुनकर मैं बहुत दुःखी हुई। मैं प्रार्थना करने लगी कि तिब्बत एक दिन स्वतंत्र होगा और मैं आध्यात्मिक नेता को व्यक्तिगत रूप से देख सकूंगी और उनका प्रवचन सुन सकूंगी। उन्होंने आगे कहा कि सभी उम्र और लिंग के तिब्बती शहीद हमारे धर्म, संस्कृति और भाषा के संरक्षण और सुधार के लिए गतिविधियों का संचालन करने का प्रयास करने वाले थे। चीनी सरकार रणनीतिक रूप से उन्हें रोकती है और यहां तक कि उनके आवागमन की स्वतंत्रता पर कठोर प्रतिबंध भी लगाती है। यह सोचकर मेरे मन में काफी विषाद होता है कि क्या संयुक्त राष्ट्र और दुनिया की अन्य सरकारें हमारी दुखद दैनिक स्थितियों और तिब्बत के अंदर तिब्बती लोगों की पीड़ाओं की सच्चाई नहीं जानती हैं।

उन्होंने आगे बताया, 'सितंबर २०१५ की शुरुआत में मेरी रिश्ते की एक बहन तेनज़िन डोल्मा और मैंने पशु चराने के दौरान कई बार गुप्त रूप से बातचीत की। २१ अक्तूबर २०१५ को बीजिंग के स्थानीय समयानुसार अपराह्न ०३ बजे हम दोनों ने तिब्बती पोशाक पहनी, अपने हाथों में परम पावन दलाई लामा के दो बड़े-बड़े चित्र लिए और न्गाबा की 'शहीद सड़क' पर भीड़ के बीच मार्च किया। साथ में हम दोनों- 'तिब्बत को मुक्त करो, परम पावन दलाई लामा और कीर्ति रिनपोछे दीर्घायु हों और उनकी शीघ्र तिब्बत वापसी हो- के नारे लगा रही थीं। हमारे मार्च को १० मिनट भी नहीं हुए थे कि हमने एक तेज़ आवाज़ सुनी और अचानक चार-पांच पुलिस अधिकारी हमारे पीछे से आ धमके और हमारे हाथों से तस्वीरें छीन लीं। हमने तस्वीरों को नहीं छोड़ा और पुलिस के साथ लगभग आधे घंटे तक खींचतान चलती रही। आख़िरकार पुलिसवालों ने हमें सड़क पर गिरा कर घसीटना शुरू कर दिया और हमें चुप रहने और चिल्लाने से रोकने लगे। लेकिन हम लगातार नारे लगाती रहीं। उन्होंने हमारे हाथों को हमारी पीठ के पीछे बांध दिया, हमें पुलिस वैन में डाल दिया और हमें न्गाबा काउंटी के हिरासत केंद्र में ले गए। फिर वे हमें बरकम शहर के एक अन्य हिरासत केंद्र में ले गए। हमसे एक छोटे से पूछताछ कक्ष में पूछताछ की गई जहां छह दिनों और रातों तक हीटर चालू रखकर अत्यधिक गर्मी पैदा की गई। अलग-अलग पूछताछकर्ताओं ने कई सवाल पूछे। जैसे हमें विरोध-प्रदर्शन करने के लिए किसने उकसाया? पहले किसने प्रदर्शन की बात शुरू की? हमें दलाई लामा की तस्वीरें कहां से मिलीं और क्या बाहर से कोई परिचित था जो हमें उकसा रहा था? पूछताछकर्ताओं ने हमें बार-बार थप्पड़ और लात मारी। वे कह रहे थे कि हम बागी हैं और हमें पता होना चाहिए कि यह कितना भयानक अपराध है। कई बार, हमने सोचा कि जल्द ही मर जाना बेहतर होगा, क्योंकि हमें भोजन और नींद से वंचित कर दिया गया था। अन्य दिनों में पूछताछकर्ताओं ने सहजता से काम किया और हमें बताया कि अगर हमने सच बताया, तो सज़ा कम कर दी जाएगी और जल्द ही रिहा कर दिया जाएगा। मानसिक और शारीरिक यातना के बावजूद हमने केवल इतना ही जवाब दिया कि हम दोनों ने स्वतंत्र रूप से विरोध करने का फैसला किया और किसी ने हमें नहीं उकसाया। हमारे परिवार के सदस्यों को भी इसके बारे में कुछ नहीं पता

था। हमने ताशी ग्याल्कलिंग काउंटी के हिरासत केंद्र में सात महीने तक कारावास भुगती।

हमारी हिरासत अवधि एक साल एक महीने पूरा होने के बाद २०१६ के नवंबर में ट्रोचू काउंटी की अदालत ने मेरी बहन और मुझे अदालत कक्ष में बुलाया और हम पर मुकदमा चलाया गया। उस दिन हम दोनों ने अपनी गिरफ़्तारी के बाद पहली बार एक-दूसरे को देखा। अदालत कक्ष में परिवार का कोई भी सदस्य नज़र नहीं आया, लेकिन सरकार द्वारा नियुक्त दो वकील वहां मौजूद थीं- एक चीनी महिला और एक तिब्बती महिला। हमें 'राष्ट्र के खिलाफ अलगाववादी कार्य' करने और 'दलाई गिरोह' का समर्थन करने के मनगढ़ंत आरोपों में तीन-तीन साल की सजा सुनाई गई। सजा सुनाने के बाद हमें सिचुआन की एक नस्लीय अल्पसंख्यक जेल में ले जाया गया और फिर लगभग तीन घंटे के बाद चेंगदू शहर की सबसे बड़ी महिला जेल में ले जाया गया। हमने सुना है कि अतीत में दो अन्य तिब्बती महिलाओं को इस जेल में रखा गया था, लेकिन जब हम वहां थे तो ६००० कैदियों में से केवल दो तिब्बती थे। पहले तीन महीनों के लिए सैन्य प्रशिक्षण, देशभक्ति शिक्षा प्राप्त करना और चीनी संविधान सीखना आवश्यक था। चीनी भाषा में अनेक दस्तावेजों का अध्ययन करने और एक कैदी के रूप में दैनिक गतिविधियों के प्रशिक्षण के बाद हमें मौखिक परीक्षा से गुजरना पड़ा। तीन महीने के बाद मैंने एक श्रमिक शिविर में काम किया जहां तांबे के तारों का निर्माण किया जाता था। मेरी बहन ने पहले सिगरेट के डिब्बे बनाए और फिर हम एक कलाई घड़ी निर्माण शिविर में स्थानांतरित कर दिए गए।

बाद में हमें पता चला कि हमारे परिवार ने हमें जेल में खाना और कपड़े भेजे थे, लेकिन हमें कुछ भी नहीं मिला। हमें कुपोषण, सर्दियों के दौरान पतले कंबलों में ठंड और नस्लीय भेदभाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा। हमें शुरू में भाषा संबंधी समस्याओं का भी सामना करना पड़ा क्योंकि हम मंदारिन चीनी नहीं बोलते थे। २१ अक्तूबर २०१८ को जेल की सजा पूरी होने के बाद हमें जेल से रिहा कर दिया गया और एक सप्ताह के लिए न्गाबा काउंटी के पेमा लहथांग पुलिस स्टेशन में रखा गया क्योंकि संबंधित अधिकारियों ने हमारे परिवार को हमारी रिहाई के लिए एक वादा-पत्र लिखने के लिए बुलाया था। मेरे परिवार को काली सूची में डाल दिया गया क्योंकि मेरा बड़ा भाई भी जेल में था। हमारी रिहाई के बावजूद हमारी अभिव्यक्ति और गतिविधि पर गंभीर रूप से प्रतिबंध लगा दिया गया था, जिससे हमारे संपर्क में आने वाले किसी भी व्यक्ति को ख़तरा हो गया था। चीनी सरकार ने मेरे परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों के लिए मुसीबतें खड़ी कर दीं। मेरी चाची छेरिंग क्यी को कई बार पूछताछ के लिए बुलाया गया। १३ मई २०२३ को मैंने बिना किसी को बताए अपनी चाची छेरिंग की के साथ वहीं से भाग निकलीं। हम २७ मई २०२३ को नेपाल के रिसेप्शन सेंटर पहुंचे और फिर २८ जून को धर्मशाला के रिसेप्शन सेंटर पहुंच गए।

◆ ४. चीन ने भिक्षुओं को दलाई लामा के निधन के बाद नहीं करने वाले विधानों की सूची थमाई

-रेडियो फ्री एशिया

दलाई लामा की मृत्यु होने की स्थिति में बौद्ध भिक्षुओं को तिब्बती आध्यात्मिक नेता की तस्वीरें प्रदर्शित करने और अन्य 'गैरकानूनी धार्मिक गतिविधियों और अनुष्ठानों' को करने से प्रतिबंधित कर दिया गया है। एक प्रशिक्षण नियमावली के अनुसार, चीनी अधिकारियों ने चीन के उत्तर-पश्चिम में गांसु प्रांत में मठों को इन प्रतिबंधों सूची वितरित की है। तिब्बत के अंदर के सूत्र और निर्वासित पूर्व राजनीतिक कैदी गोलोक जिग्मे ने यह जानकारी दी है।

सुरक्षा कारणों से नाम न छापने का अनुरोध करते हुए तिब्बत के अंदर के सूत्र ने कहा, मैनुअल में १० नियमों को सूचीबद्ध किया गया है जिनका पालन करना बौद्ध भिक्षुओं के लिए अनिवार्य किया गया है। इन नियमों में दलाई लामा के पुनर्जन्म को मान्यता देने की प्रक्रिया को बाधित करने से भी मना किया गया है।

तिब्बतियों का मानना है कि उन्हें पुनर्जन्म में बौद्ध विश्वास के अनुसार अपने उत्तराधिकारी का निर्धारण करने का अधिकार है, जबकि चीनी सरकार सदियों पुरानी चयन पद्धति पर अपना आधिपत्य जमाना चाहती है।

८८ वर्षीय १४वें दलाई लामा चीन के शासन के खिलाफ १९५९ में असफल राष्ट्रीय विद्रोह के दौरान तिब्बत से भाग गए थे और तब से भारत के धर्मशाला में निर्वासन में रह रहे हैं। वह तिब्बत के इतिहास में सबसे लंबे समय तक धर्मगुरु के पद पर रहने वाले तिब्बती बौद्ध आध्यात्मिक गुरु बन गए हैं।

रेडियो फ्री एशिया को यह मैनुअल प्राप्त हुआ है, जिसे तिब्बत के ऐतिहासिक अमदो क्षेत्र में कनलो तिब्बती स्वायत्त प्रान्त में भिक्षुओं को जारी किया गया था। अधिकार समूहों का कहना है कि तिब्बती लोगों, विशेषज्ञों और अधिकार समूहों की धार्मिक स्वतंत्रता पर नकेल कसने का बीजिंग का यह नवीनतम प्रयास है।

◆ ५. तिब्बती राजनीतिक कैदियों का विवरण - जांगचुप न्गोदुप

जांगचुप न्गोदुप
गिरफ्तारी की तारीख: ०२ अप्रैल २०१८
स्थिति: अज्ञात स्थान पर हिरासत में
आरोप: तिब्बत के द्रिरू में चीनी खनन के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन

संक्षिप्त परिचय : चीनी अधिकारियों ने अप्रैल २०१८ में जांगचुप न्गोदुप और ३० अन्य तिब्बतियों को हिरासत में लिया और पीटा, क्योंकि उन्होंने तिब्बत में परंपरागत खाम प्रांत के नागचू के द्रिरू काउंटी में सेबट्रा ज़ैगयेन नामक पवित्र पर्वत पर खनन की सरकार की योजना का विरोध किया था। जांगचुप न्गोदुप पर मार्कोर गांव के नेता कर्मा की हिरासत के संबंध में निर्वासित तिब्बती स्रोतों के साथ जानकारी साझा करने और २०१८ में उनकी गिरफ्तारी के बाद द्रिरू में चीनी खनन परियोजना के बारे में जानकारी साझा करने का आरोप लगाया गया था। लगभग ०६ वर्षों से पीआरसी सरकार जांगचुप की गिरफ्तारी, सजा और उनके कैद में रखने के स्थान के बारे में जानकारी नहीं दे रही है। साथ ही यह भी पता नहीं चल पा रहा है कि जांगचुप को उचित चिकित्सा देखभाल मिल रही है या नहीं और उसके परिवार की उस तक पहुंच दी जाएगी या नहीं। १० अगस्त २०२३ को जांगचुप न्गोदुप और आठ अन्य कैद तिब्बती पर्यावरण मानवाधिकार कार्यकर्ताओं की तत्काल रिहाई का आह्वान संयुक्त राष्ट्र के तीन स्वतंत्र विशेषज्ञों ने भी किया था।

◆ ६. तिब्बती राजनीतिक कैदियों का विवरण - रोंग्वो गेंडुन ल्हुंदुप

रोंग्वो गेंडुन ल्हुंदुप
उपनाम: 'ल्हम्क ओक'
गिरफ्तारी की तारीख: ०२ दिसंबर २०२०
स्थिति: ०४ साल की कैद
आरोप: अलगाववाद भड़काना
संक्षिप्त परिचय : गेंडुन ल्हुंदुप, तिब्बत के अमदो प्रांत के रेबगोंग स्थित रोंगवो मठ के पूर्व भिक्षु हैं।

प्रांत को चीनी अधिकारियों द्वारा ०२ दिसंबर २०२० को अवैध रूप से हिरासत में लिया गया था। गेंडुन ल्हुंदुप को 'खोरवा' शीर्षक से कविताओं का एक संग्रह प्रकाशित करने के तुरंत बाद ०१ दिसंबर २०२१ को ज़िनिंग इंटरमीडिएट पीपुल्स कोर्ट द्वारा अलगाववाद भड़काने के झूठे आरोप में चार साल की निश्चित अवधि की कैद और दो साल तक राजनीतिक अधिकारों से वंचित रखने की सजा सुनाई गई। तिब्बती भाषा और संस्कृति के पक्ष में बोलने वाले प्रसिद्ध कार्यकर्ता गेंडुन ने कई कविताएँ लिखी हैं, जिनमें 'सुअर वर्ष में जन्म लेने वाला' और 'खोरवा' आदि शामिल हैं। बार-बार अनुरोध के बावजूद चीनी अधिकारियों ने लगातार उनके परिवार को उनकी सज़ा के बारे में जानकारी देने और जेल में उनसे मिलने देने से इनकार किया है। एक प्रमुख कवि, आलोचक और तिब्बती संस्कृति के प्रखर समर्थक के रूप में उनसे अतीत में कई मौकों पर पूछताछ की गई और हिरासत में भी रखा गया।

तीन : तिब्बत के ११वें पंचेन लामा बने दुनिया के सबसे कम उम्र के राजनीतिक कैदी

◆ ७. केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने परम पवित्र ११वें पंचेन रिनपोछे का ३५वां जन्मदिन मनाया

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने निर्वासन में ताशी ल्हुनपो मठ के सहयोग से आज ११वें कुंजिग पंचेन रिनपोछे जेत्सुन तेनजिन गेधुन येशी ल्विनले फुंटसोक पाल सांगपो के ३५वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में छुगलगखांग में एक समारोह आयोजित किया। समारोह में एस्टोनियाई संसदीय प्रतिनिधिमंडल, हिमालयी क्षेत्र के बौद्ध नेता और ताशी ल्हुनपो मठ के महंत वेन ज़ीकग्याब रिनपोछे उपस्थित रहे।

एस्टोनियाई संसद के सदस्य और एस्टोनियाई पार्लियामेंटरी सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत के अध्यक्ष माननीय जुकु-काले रेड ने परम पवित्र ११वें पंचेन रिनपोछे के ३५वें जन्मदिन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। चीनी सरकार द्वारा अपहरण कर लिए गए पंचेन लामा के बारे में पिछले २९ साल एक महीने से कोई अता-पता नहीं है। इस समारोह में विशेष अतिथि सिक्किम सरकार के धार्मिक मामलों के विभाग के पूर्व सचिव छेचोकलिंग रिनपोछे, लद्दाख बौद्ध एसोसिएशन के कार्यवाहक अध्यक्ष रेगज़िन दोरजे, एस्टोनियाई संसद के सदस्य और पूर्व अध्यक्ष हेन पल्लुआस, एस्टोनियाई संसद के सदस्य टार्मो टैम, एस्टोनियाई तिब्बत समर्थक समूह के समन्वयक रॉय स्ट्राइडर, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन का

नेतृत्व और आज के अवसर पर धर्मशाला का दौरा करने वाले प्रतिनिधिमंडल के अन्य सदस्य, जिनमें प्रतिष्ठित मीडिया घरानों के प्रमुख पत्रकार हैं, भी शामिल हुए।

इस अवसर पर सिक्योंग पेन्पा छेरिंग और स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल द्वारा क्रमश: कशाग (कैबिनेट) और निर्वासित तिब्बती संसद के वक्तव्य को पढ़कर सुनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए कार्यक्रम के अतिथियों ने संयुक्त रूप से ११वें पंचेन रिनपोछे के चित्र के साथ अंकित एक जिग्सॉ पहेली का उद्घाटन किया, जिसके बाद एक औपचारिक केक काटा गया।

एस्टोनियाई सरकार के विदेश मामलों के आयोग के सदस्य मुख्य अतिथि जुकु-काले रेड ने अपने मुख्य भाषण में तिब्बतियों की सभा में मुख्य रूप से कहा कि, 'हमारा अतीत भी एक जैसा रहा है और हमारा अतीत भी उतना ही भयानक था। लेकिन हमें उम्मीद है कि हमारा भविष्य भी ऐसा ही होगा जो भयानक नहीं होगा।' आज सुबह एक विशेष सभा के दौरान परम पावन दलाई लामा के साथ हुई बातचीत का खुलासा करते हुए एस्टोनियाई पार्लियामेंटरी सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत के अध्यक्ष ने अपनी बात समाप्त करने से पहले तिब्बतियों के स्वतंत्र भविष्य की कामना की।

इसी तरह पंचेन लामाओं के पारंपरिक मठ- ताशी ल्हुनपो मठ- के महंत ने सभी तिब्बतियों से परम पावन दलाई लामा द्वारा मान्यता प्राप्त ११वें पंचेन लामा की रिहाई के पक्ष में अभियान चलाने के लिए अपने प्रयासों को एकजुट करने का आग्रह किया। रिनपोछे ने सभा को लंबे समय से लापता पंचेन रिनपोछे और चैड्रेल रिनपोछे की रिहाई और और न्याय दिलाने के लिए निर्वासन में ताशी ल्हुनपो मठ द्वारा चलाए गए अभियान के बारे में जानकारी दी।

समारोह के दौरान अन्य अतिथियों ने भी भाषण दिया और इस कार्यक्रम में तिब्बती गायक छेरिंग ग्युरमी और टीआईपीए कलाकारों द्वारा पंचेन रिनपोछे के सम्मान में ताज़ा निर्मित गीतों का गायन किया गया। साथ ही तिब्बती विद्वान थिनले वांगचुक की एक नई पुस्तक और निर्वासन में ताशी ल्हुनपो मठ द्वारा किए गए पांच प्रकाशनों का विमोचन भी हुआ।

◆ ८. हिमालयी क्षेत्र के बौद्ध नेताओं ने ११वें पंचेन लामा के ठिकाने का मुद्दा उठाने के लिए संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस की

धर्मशाला। पंचेन लामा की पारंपरिक सीट- ताशी ल्हुनपो मठ के महंत क्याबजे ज़ीक्याब तुल्कु जेछुन तेनज़िन थुप्टेन रबग्याल, सिक्किम के क्याब्जे लोचन रिनपोछे, छेचोकलिंग तुल्कु तेनजिंग गेलेक और लद्दाख बौद्ध एसोसिएशन के कार्यवाहक अध्यक्ष रेगज़िन दोरजे ने संयुक्त रूप से एक संवाददाता सम्मेलन आयोजित कर परम पवित्र ११वें पंचेन रिनपोछे की तत्काल रिहाई का आह्वान किया। परम पावन दलाई लामा ने परम पवित्र ११वें पंचेन रिनपोछे को उनके जन्मदिन के अवसर पर मान्यता दी थी।

प्रेस बैठक में ज़ीक्याब रिनपोछे ने स्पीति में प्रमुख मठ के क्याब्जे लोचन रिनपोछे, छेचोकलिंग रिनपोछे और रेगज़िन दोरजय के साथ स्वयं द्वारा हस्ताक्षरित एक संयुक्त अपील पढ़ी। इस अपील में लिखा है, 'यह बहुत चिंता की बात है कि हम हिमालयी क्षेत्र के चार मठों और संघों और पंचेन लामा की पारंपरिक सीट- ताशी ल्हुनपो मठ का प्रतिनिधित्व करते हुए संयुक्त राष्ट्र, अंतरराष्ट्रीय समुदाय और दुनिया भर की सरकारों से निम्नलिखित पांच बिंदुओं के साथ यह संयुक्त अपील कर रहे हैं।

१. हम विदेशी सरकारों, संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से एक प्रस्ताव पारित करने का आग्रह करते हैं जिसमें वे चीन स्थित अपने राजदूतों को निर्देश दें कि उनके राजदूत चीन सरकार से ११वें पंचेन लामा से मिलने और उनके ठिकाने और उनकी सेहत के बारे में जानकारी देने का आग्रह करें।

२. हम विदेशी सरकारों, संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से ११वें पंचेन लामा को एक ऐसे पुरस्कार से सम्मानित करने का आग्रह करते हैं इस पुरस्कार के माध्यम से उन्हें लगभग २९ वर्षों से जबरन गायब किए जाने के शिकार के रूप में मान्यता दी जाए, जिन्हें उनके मानवाधिकारों, स्वतंत्रता, बच्चे के अधिकार और स्वतंत्र आवाजाही, निवास और अन्य मौलिक अधिकार के साथ ही धार्मिक अधिकारों से वंचित किया गया है।

३. उनकी शीघ्र रिहाई सुनिश्चित करने के लिए और उनकी स्थिति पर ध्यान आकर्षित करने के लिए हम विदेशी सरकारों, संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से ११वें पंचेन लामा का

जन्मदिन मनाने की अपील करते हैं।

४. हम विदेशी सरकारों, संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से ११वें पंचेन लामा की खोज समिति के प्रमुख ताशी ल्हुनपो मठ के लामा चैड्रेल रिनपोछे और बहुत सारे तिब्बती राजनीतिक कैदियों की रिहाई के लिए सक्रिय रूप से आह्वान करने का भी आग्रह करते हैं। तिब्बत के अंदर गंभीर स्थिति के कारण विरोध स्परूप अब तक १५८ तिब्बतियों ने आत्मदाह कर लिया है। इनमें नवीनतम आत्मदाह करनेवाले २५ वर्षीय तिब्बती गायक छेवांग नोरबू और इससे पहले २०२२ में आत्मदाह करनेवाले ८१ वर्षीय तपहुन रहे हैं। तिब्बत की गंभीर स्थिति की ओर संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान आकर्षित करने के लिए आत्मदाह करने वालों ने अपने सबसे प्रिय जीवन का बलिदान दिया है। इसलिए, हम विदेशी सरकारों, संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से उनकी अपील पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देने का आग्रह करते हैं।

५. तिब्बत में तिब्बतियों की आकांक्षा है कि परम पावन दलाई लामा जल्द से जल्द तिब्बत लौट सकें। इसलिए, हम विदेशी सरकारों, संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से दृढ़तापूर्वक अपील करते हैं कि वे पारस्परिक रूप से लाभकारी मध्यम मार्ग के माध्यम से तिब्बत-चीन संघर्ष के समाधान को सक्षम करने के लिए परम पावन दलाई लामा और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए ठोस पहल करने पर विचार करें।

विदेशी सरकारें, उनके नागरिक, संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय लगातार तिब्बती लोगों का समर्थन करते रहे हैं। इसलिए, हम इस अवसर पर उन सबके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। आज हमने जो पांच सूत्रीय संयुक्त अपील पेश की है, वह एक तरह से करोड़ों आस्थावानों और अनुयायियों के समग्र कल्याण से भी जुड़ी है और इसलिए, अनेक लोगों के लोकतांत्रिक अधिकारों से भी जुड़ी है।

हमें दृढ़ आशा है कि विदेशी सरकारें, संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय समुदाय तिब्बती स्थिति की वास्तविकता, विशेष रूप से पंचेन लामा के जबरन गायब होने के मुद्दे पर पर विचार करेंगे और हमारी अपीलों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करेंगे।

प्रेस बैठक को संबोधित करते हुए लद्दाख बौद्ध एसोसिएशन के कार्यवाहक अध्यक्ष रेगज़िन दोर्जे ने परम पावन ११वें पंचेन लामा के साथ बदसलूकी पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की और परम पावन दलाई लामा द्वारा मान्यता दिए जाने के बाद से ही लंबे समय तक उनके गायब रहने पर निराशा व्यक्त की।

उन्होंने भारत सरकार से पंचेन लामा के ठिकाने के संबंध में चीन के साथ बातचीत शुरू करने का आग्रह किया और संयुक्त राष्ट्र से स्थिति में हस्तक्षेप करने की अपील की। उन्होंने आगे कहा, 'एक बौद्ध नेता के रूप में मुझे पंचेन लामा की वर्तमान स्थिति पर अत्यधिक संदेह है। स्थिति यह है कि उनके लापता होने के बाद से किसी ने भी उन्हें नहीं देखा है। हमें चीनी सरकार पर दबाव बनाना चाहिए क्योंकि यह हमारे मानवाधिकारों का उल्लंघन है। यह बौद्ध समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण क्षति है और एक परेशान करने वाला संदेश है कि पंचेन लामा इतने वर्षों के बाद भी लापता हैं।'

९. एस्टोनियाई संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने प्रेस कांफ्रेंस कर ११वें पंचेन लामा की स्थिति पर चिंता प्रकट की

धर्मशाला। ११वें पंचेन लामा गेदुन चोएक्यी न्यिमा के ३५वें जन्मदिन पर २५ अप्रैल २०२४ को एक आधिकारिक समारोह में भाग लेने आए एस्टोनियाई संसद और तिब्बत समर्थक समूह के प्रतिनिधियों ने छुगलगखांग में एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन किया।

प्रतिनिधिमंडल: संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में एस्टोनियाई सांसद और एस्टोनिया के विदेश मामलों के आयोग के सदस्य जुकू काले रेड, एस्टोनियाई संसद के सदस्य और इसके पूर्व अध्यक्ष जेन पोलुआस और एस्टोनियाई संसद के सदस्य तार्मो टैम और

पूर्व एस्टोनियाई सांसद और पत्रकार एंड्रेस हर्केल ने प्रेस कांफ्रेंस में हिस्सा लिया। इन्होंने प्रेस के माध्यम से चीन से ११वें पंचेन लामा की तत्काल रिहाई की अपील की और तिब्बत मुद्दे के प्रति अपना अटूट समर्थन भी व्यक्त किया।

एस्टोनियाई पार्लियामेंटरी सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत के अध्यक्ष जुको काले रैड ने एस्टोनियाई राष्ट्र और उसके लोगों के लिए इस प्रेस कांफ्रेस के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने टिप्पणी की कि परम पावन दलाई लामा ने तीन अलग-अलग अवसरों पर एस्टोनिया का दौरा किया था और हर बार बड़ी संख्या में एस्टोनियाई लोगों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। एस्टोनिया के लोगों ने लगातार तिब्बत के प्रति गहरी प्रशंसा और स्नेह दिखाया है और उम्मीद करता हूं कि यह स्थायी भावना बनी रहेगी। विदेशी आधिपत्य से गुजरने के अनुभव तिब्बत और एस्टोनिया के लिए एकसमान रहे हैं। उन्होंने कहा, 'हम जिन चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में खुद को पाते हैं, उसके बावजूद यह जरूरी है कि प्रगति को बनाए रखें और पीछे हटने या ठहरने के बारे में सोचें भी नहीं। वहां की सरकारी प्रणाली और संस्कृति मानवाधिकारों के उल्लंघन और जबरन कब्जे के कृत्य को नाजायज मानती है।

उन्होंने तिब्बती लोगों के लिए आत्मनिर्णय के अधिकार पर यूरोपीय देशों का समर्थन प्राप्त करने के लिए अधिक दृढ़ विश्वास और प्रभाव के साथ यूरोपीय देशों में आवाज उठाने की अपनी प्रतिबद्धता का आश्वासन दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि तिब्बत की अनूठी विरासत के अस्तित्व की निरंतरता को सुनिश्चित करने के लिए जरूरी है कि चीन तिब्बती मामलों में हस्तक्षेप करने से बचे।

प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों के संबोधन के बाद मीडिया प्रतिनिधियों के साथ एक प्रश्नोत्तर-सत्र रखा गया, जिसमें ११वें पंचेन लामा को रिहा करने के लिए चीन से तत्काल अनुरोध करने को लेकर चर्चा की गई। सांसद जुको काले रेड ने जवाब दिया, 'जैसा कि परम पावन (परम पावन के साथ निजी बातचीत के दौरान) ने आज उल्लेख किया, वर्तमान मुद्दा केवल पंचेन लामा का ही नहीं है, यह एक वैश्विक मामला है जिसमें गैरकानूनी कृत्य, जबरन कब्ज़ा और मानवाधिकारों का उल्लंघन कहा जाना चाहिए। हम यूरोपीय संसद में इन मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।'

इसके अतिरिक्त उन्होंने दावा किया, 'यूरोपीय संसद का आगामी चुनाव नजदीक है। मेरे पास सक्षम व्यक्तियों को वोट देने के लिए इन मुद्दों और चिंताओं को उठाने जैसा जरूरी मानदंड है। इसलिए न केवल ११वें पंचेन लामा के ठिकाने पर अलग से चर्चा करना महत्वपूर्ण है, बल्कि चीनी सरकार की गैरकानूनी कार्रवाइयों पर चर्चा करना और उन्हें प्रकाश में लाना भी महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, उन्होंने सोवियत संघ के शासन के तहत अपने अनुभवों के बारे में एक उल्लेखनीय बात कही, जिसमें चीनी सरकार सहित सत्तावादी सरकार के प्रति अपना पूरा अविश्वास व्यक्त किया।

प्रतिनिधिमंडल के अन्य सदस्यों ने भी प्रेस कांफ्रेंस में भाग लिया और तिब्बत के अंदर पीआरसी के निरंतर दमन पर अपनी चिंताओं को साझा किया।

चार: तिब्बत के लिए अंतरराष्ट्रीय समर्थन

◆ १०. यूरोपीय संसद में 'यूरोप फॉर तिब्बत' अभियान का आगाज

ब्रुसेल्स। यूरोपीय संघ का चुनाव ०६-०९ जून को होनेवाला है। इससे पहले यूरोपीय संसद के सदस्यों के साथ बैठक के दौरान यूरोपीय संसद में 'यूरोप फॉर तिब्बत' अभियान शुरू किया गया।

अभियान के लिए लांच की गई वेबसाइट eu4tibet.org सदस्य देशों में रहनेवाले निर्वासित तिब्बती लोगों के अधिकारों और स्वतंत्रता की वकालत करने वाले सभी समूहों के लिए एक मंच के रूप में काम करेगी, ताकि वे २०२४ के यूरोपीय चुनावों के उम्मीदवारों से तिब्बत के लिए समर्थन की घोषणा करवा सकें और तिब्बत की स्थिति पर उनकी पार्टियों की राजनीतिक स्थिति पर सवाल उठा सकें।

यह अभियान ब्रुसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय और 'इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत (आईसीटी)' द्वारा लंदन और जिनेवा स्थित तिब्बत कार्यालयों और अंतरराष्ट्रीय तिब्बत नेटवर्क के सहयोग से संयुक्त रूप से आयोजित किया गया है। इसका उद्देश्य यूरोपीय संसद के वर्तमान और भविष्य के सदस्यों का समर्थन जुटाना है। समूह यूरोप में तिब्बती समुदाय, वी-टैग सदस्य और तिब्बत का पक्ष रखने वाले अन्य सभी समूह, तिब्बत के समर्थक यूरोपीय संसद के सदस्यों के एक समर्पित समूह को फिर से स्थापित करेगा, ताकि आगामी संसद के कार्यकाल में यूरोपीय संघ के एजेंडे पर तिब्बत की निरंतर उपस्थिति सुनिश्चित की जा सके।

कार्यक्रम में वक्ताओं में यूरोपीय संसद के सदस्य- मिकुलस पेक्सा, सलीमा येनबौ, औसरा मालदेइकियेन के अलावा ब्रुसेल्स में परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधि रिगज़िन जेनखांग और इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत के कार्यकारी निदेशक वांगपो टेथोंग शामिल थे।

कार्यक्रम में आईसीटी ब्रुसेल्स के संसदीय सहायक विंसेंट मेट्टेन और मेलानी ब्लोंडेल, तिब्बत कार्यालय, ब्रुसेल्स के थिनले वांगड्यू और वी-टैग सदस्य भी शामिल हुए।

कार्यक्रम के समापन पर यूरोपीय संसद के सदस्यों को पारंपरिक तिब्बती दुपट्टा भेंट किया गया।

-ओओटी ब्रुसेल्स द्वारा तैयार रिपोर्ट

◆ ११. अमेरिकी सीनेट की विदेश मामले संबंधी समिति ने तिब्बत समाधान विधेयक को मंजूरी दी, समिति अध्यक्ष ने सीनेट में विधेयक को पारित कराने में अपने समर्थन का आश्वासन दिया।

वाशिंगटन डीसी। तिब्बत-चीन विवाद के समाधान को बढ़ावा देनेवाला 'रिज़ॉल्व तिब्बत बिल (तिब्बत समाधान विधेयक), एस- १३८' को १६ अप्रैल २०२४ को अमेरिकी सीनेट की विदेश मामले संबंधी समिति द्वारा सर्वसम्मति से अनुमोदित कर दिया गया।

समिति की बैठक के बाद मीडिया से बात करते हुए समिति के अध्यक्ष सीनेटर बेन कार्डिन ने इस विधेयक के संबंध में अपनाई जाने वाली प्रक्रिया के संबंध में एक रात पहले सिक्योंग के साथ अपनी चर्चा की जानकारी दी और कहा कि विधेयक की भाषा बिल्कुल वैसी ही थी जैसी निचले सदन ने मंजूरी दी थी।

तिब्बती भाषा के प्रसारण में कहा गया कि बिल को सर्वसम्मति से मंजूरी मिलने के तुरंत बाद सीनेटर जेफ मर्कले (डेमोक्रेटिक पार्टी) और सीनेटर टॉड यंग (रिपब्लिकन पार्टी) ने बताया कि समिति द्वारा बिल को मंजूरी तिब्बत-चीन संघर्ष को हल करने के लिए परम पावन दलाई लामा या उनके प्रतिनिधि और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के बीच बातचीत शुरू कराने के लिए अमेरिका द्वारा चलाए जा रहे शांतिपूर्ण अभियान की नीति का एक और उदाहरण है। उन्होंने आगे कहा कि बिल अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में पहले ही पारित हो चुका है और अब इसे सीनेट में पेश किया जाना है।

प्रतिनिधि डॉ. नामग्याल चोएड्रुप ने उत्तर अमेरिकी तिब्बती संघों के सदस्यों को यह बड़ी खुशखबरी दी और अपने-अपने राज्यों के सीनेटरों से समर्थन मांगने की प्रतिबद्धता के लिए केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की ओर से उनकी सराहना की और निरंतर प्रयास करने का आह्वान किया। यह सुनिश्चित करते हुए कि तिब्बत कार्यालय और इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत (आईसीटी) अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं, प्रतिनिधि ने बताया कि सिक्योंग अमेरिका में चल रही इस यात्रा के दौरान कानून निर्माताओं और सरकारी अधिकारियों के साथ बैठकों में सक्रिय रूप से शामिल रहे हैं ताकि इसे पारित करने की वकालत की जा सके।

उन्होंने अमेरिकी सीनेट समिति के अध्यक्ष सीनेटर बेन कार्डिन के साथ सिक्योंग पेन्पा छेरिंग और आईसीटी अध्यक्ष रिचर्ड गेरे की सफल बैठक की भी सराहना की, जिसके दौरान बेन कार्डिन ने बिल के पारित होने के लिए अपने दृढ़ समर्थन की पुष्टि की।

-तिब्बत कार्यालय, वाशिंगटन डीसी द्वारा तैयार रिपोर्ट

◆ १२. मेक्सिको के सांसदों के समूह और 'फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत' ने तिब्बत के अधिकारों के लिए अभियान चलाने की रणनीति बनाने और अपने दृढ़ समर्पण को दोहराते हुए बैठक की।

ब्राज़ील। 'फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत' और मेक्सिको के सांसदों के समूह ने २३ अप्रैल २०२४ को सुबह १०:०० बजे मेक्सिको की संसद में आयोजित एक ऐतिहासिक सभा में तिब्बत के अधिकारों और आत्मनिर्णय के लिए रणनीति बनाने और इसके पक्ष में अभियान चलाने के प्रति दृढ़ समर्पण का इजहार किया। कई प्रतिनिधियों की पुनर्निर्वाचन अभियानों में व्यस्त होने के कारण अनुपस्थित रहने के बावजूद तिब्बत के हित के लिए मेक्सिको में एकजुटता का माहौल है। मेक्सिको के चुनाव कानून के

अनुसार पुनर्निर्वाचन अभियानों में रहना प्रत्याशियों के लिए आवश्यक होता है।

'मैक्सिकन पार्लियामेंटेरियंस सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत' के अध्यक्ष डिप्टी साल्वाडोर कारो के नेतृत्व में सम्मानित उपस्थित लोगों का गर्मजोशी से स्वागत किया गया। इनमें डिप्टी चैपमैन मोरेनो मैनुअल, दिपुतदा मा टेरेसा रोसौरा ओचोआ मेजिया, दिपुतदा लिडिया गार्सिया अनाया और मेक्सिको कासा तिब्बत के अध्यक्ष टोनी करम शामिल थे। उनके साथ मेक्सिको लोसेलिंग सेंटर से गेशे शेराप चोफेल, लिगमिनचा सेंटर मेक्सिको से युंगड्रुंग लोडो, आईटीएन लैटिन के समन्वयक टेरेलुज फ्लोर्स, तिब्बत एमएक्स का प्रतिनिधित्व करने वाले रेमुंडो और एलेक्स और एक प्रतिष्ठित तिब्बत विशेषज्ञ डॉ. मैरी ब्लैंका जैसी उल्लेखनीय हस्तियां थीं। उनकी सामूहिक उपस्थिति ने तिब्बती मुद्दे के समर्थन में एक विविध लेकिन एकीकृत मोर्चे का आगाज कर दिया।

डिप्टी साल्वाडोर कारो ने तिब्बत के अधिकारों के लिए सामूहिक प्रयासों पर जोर देकर सत्र की शुरुआत की और ०८ अगस्त २०२२ से २३ अप्रैल २०२४ तक तिब्बत के मेक्सिकन मित्र सांसदों की गतिविधियों का सारांश के साथ उनके समर्पित प्रयासों का व्यापक अवलोकन प्रदान किया।

इस परिचयात्मक सत्र में प्रत्येक प्रतिभागी ने अपनी भूमिकाओं और इस उद्देश्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का इजहार किया, जिससे समर्थकों के विविध समूह के बीच समुदाय की भावना को बढ़ावा मिला।

◆ १३. अर्जिया रिनपोछे ने तिब्बत में धार्मिक उत्पीड़न के बारे में जापानी सांसदों को बताया

टोक्यो। चीन द्वारा तिब्बत और खुद चीन में मानवाधिकार उल्लंघनों की निगरानी करने वाले जापानी संसदीय समूह ने आज संसद भवन में टोक्यो का दौरा कर रहे भिक्षु अर्जिया रिनपोछे को आमंत्रित किया। अर्जिया तिब्बत में अपने जीवन के अनुभव और तिब्बत में हो रहे धार्मिक उत्पीड़न के बारे में सांसदों को जानकारी देने के लिए जापान के दौरे पर हैं।

चीन के मानवाधिकार निगरानी समूह के अध्यक्ष फुरुया कीजी ने भिक्षु अर्जिया रिनपोछे का स्वागत किया और उनसे अनुरोध किया कि वे तिब्बत में धार्मिक स्वतंत्रता के घोर उल्लंघन और दमनकारी चीनी शासन के तहत एक बड़े लामा के तौर पर अपने अनुभव के बारे में सांसदों को बताएं।

भिक्षु अर्जिया रिनपोछे ने संसद सम्मेलन कक्ष में बोलने का अवसर देने के लिए जापानी संसदीय समूह को धन्यवाद दिया। रिनपोछे ने सांसदों, कर्मचारियों और मीडिया को बताया कि कैसे चीन ने तिब्बत पर आक्रमण किया। वहां उसने मठों, धार्मिक कलाकृतियों को नष्ट कर दिया और कैसे उन्हें तथा अन्य भिक्षुओं को भिक्षु वेश छोड़ने के लिए मजबूर करके उन्हें धार्मिक शिक्षा से वंचित कर दिया गया। उन्होंने इस बारे में भी बताया कि कि कैसे परम पावन दलाई लामा द्वारा मान्यता प्राप्त ११वें पंचेन लामा का अपहरण कर लिया गया और कैसे संदिग्ध तरीकों से एक झूठे पंचेन लामा को तिब्बत पर थोप दिया गया।
रिनपोछे ने कहा कि उन्हें दिया गया उच्च धार्मिक पद कम्युनिस्ट नेतृत्व द्वारा नियंत्रित था और उन्हें कम्युनिस्ट सरकार द्वारा उनका उपयोग करने के एवज में दिया गया था। जब उनसे थोपे गए फर्जी पंचेन लामा को पढ़ाने के लिए कहा गया और धार्मिक विश्वास के खिलाफ काम करने के लिए मजबूर किया गया तो उन्होंने तिब्बत से भागने का फैसला किया।

'जैपनिज पार्लियामेंटरी ग्रुप फॉर तिब्बत' के अध्यक्ष शिमामुरा हकुबुन ने अर्जिया रिनपोछे को उनके आंखो देखी विवरण सुनाने के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि इससे सांसदों को तिब्बत में चीनी धार्मिक उत्पीड़न के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने में बहुत मदद मिली। उन्होंने रिनपोछे को

आश्वासन दिया कि जापान तिब्बत और दक्षिणी मंगोलिया में चीनी दमन के खिलाफ अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करेगा। भिक्षु अर्जिया रिनपोछे ने सांसदों के सवालों का जवाब दिया कि जापान कैसे जापानी मठों के साथ संबंध और तिब्बती स्वतंत्रता के अभियान में मदद कर सकता है।

रिनपोछे ने जापानी सरकार और जनता से तिब्बत के समर्थन में बयान जारी करने का अनुरोध किया। जापानी मठों के साथ संबंधों पर रिनपोछे ने कहा कि जापानी संघ के सदस्य परम पावन दलाई लामा का बहुत सम्मान करते हैं और उन्होंने तिब्बती बौद्ध समुदाय के साथ अच्छे संबंध बनाए रखे हैं। स्वतंत्रता के मुद्दे पर रिनपोछे ने परम पावन दलाई लामा के मध्यम मार्ग दृष्टिकोण को समझाया और जापानी संसद से इसका समर्थन करने का अनुरोध किया।

भिक्षु अर्जिया रिनपोछे मंगोलियाई मूल के हैं, जिन्हें १९५२ में १०वें पंचेन लामा द्वारा दो साल की उम्र में आठवें अर्जिया रिनपोछे के रूप में मान्यता दी गई थी।

परम पावन दलाई लामा के संपर्क कार्यालय के प्रतिनिधि डॉ. आर्य और शिज़ुओका विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अकीरा ओहनो ने रिनपोछे की बातचीत को सुविधाजनक बनाने वाले पैनल की अगुआई की। जेफ़ ने रिनपोछे के भाषण को समझाने में मदद की। वार्ता में सांसदों को रिनपोछे की पुस्तक 'सर्वाइविंग द ड्रैगन' का जापानी संस्करण वितरित किया गया।

- जापान स्थित तिब्बत कार्यालय द्वारा तैयार रिपोर्ट

- पांच: केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की नवीनतम गतिविधियां

◆ १४. तिब्बत-मंगोल संबंधों पर पहला सम्मेलन भविष्य के सहयोग के वादों के साथ सफलतापूर्वक संपन्न

धर्मशाला। दो दिवसीय तिब्बत-मंगोल संबंध सम्मेलन आज ०२ अप्रैल २०२४ को एक संक्षिप्त समापन सत्र के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हो गया। इस सम्मेलन में निर्वासित तिब्बत सरकार के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने भाग लिया।

इस प्रथम सम्मेलन की सफलता की प्रशंसा करते हुए प्रतिनिधि तेलो रिनपोछे ने आने वाले वर्षों में इसी तरह की बैठकों के आयोजन के माध्यम से दोनों समुदायों के बीच घनिष्ठ संबंधों की पुनर्स्थापना पर जोर दिया। उन्होंने तिब्बत नीति संस्थान से तिब्बत और उसके सबसे लंबे समय के 'सहयोगी' रहे मंगोल के बीच संबंधों का गहन अध्ययन करने के लिए एक शोध दल बनाने का अनुरोध किया।

अपने समापन संबोधन में तिब्बत नीति संस्थान के निदेशक दावा छेरिंग ने घोषणा की, 'इस ऐतिहासिक शिखर सम्मेलन के समाप्त होने के साथ ही तिब्बत और मंगोलों के बीच संबंध की बहाली का एक नया चरण शुरू हो गया है।' दोनों समुदायों के बीच सदियों पुराने संबंधों की फिर से स्थापना के बाद उन्होंने संपूर्ण भव्य प्राणियों के लाभ के लिए तिब्बती बौद्ध धर्म की साझा विरासत को संरक्षित और बढ़ावा देने पर जोर दिया। उन्होंने आगे कहा कि सम्मेलन के दौरान वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत विषयों को संकलन कर एक पुस्तक जल्द ही तिब्बत नीति संस्थान द्वारा प्रकाशित की जाएगी।

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं देते हुए सभा को मध्यम मार्ग दृष्टिकोण की नीति के माध्यम से तिब्बत-चीन संघर्ष को हल करने के लिए १६वें कशाग की दृढ़ प्रतिबद्धता के बारे में बताया। इसकी परिकल्पना परम पावन ने की थी। मध्यम मार्ग दृष्टिकोण को दलाई लामा और निर्वासित तिब्बती संसद द्वारा सर्वसम्मति से पारित किया गया था। तिब्बती राजनीतिक नेता ने विभिन्न रणनीतियों के माध्यम से तिब्बत की ऐतिहासिक स्वतंत्रता की स्थिति की आधिकारिक मान्यता प्राप्त करने के सीटीए के प्रयासों के बारे में भी जानकारी दी। इसमें समान विचारधारा वाले देशों में प्रस्ताव पारित कराना और डॉ. माइकल वैन वॉल्ट वैन प्राग और प्रोफेसर होन-शियांग लाउ के प्रकाशनों में शामिल सटीक विवरणों का प्रसार करना शामिल है।

◆ १५. डिट्टी स्पीकर ने आईसीटी बोर्ड के सदस्य स्टीव श्रोएडर से मुलाकात की

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती संसद की डिट्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखांग ने ०२ अप्रैल, २०२४ को 'इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत' के बोर्ड सदस्य स्टीव श्रोएडर, उनके परिवार के सदस्यों और आईसीटी अध्यक्ष तेनचो ग्याछो के साथ बैठक की।

बैठक के दौरान आने वाले मेहमानों को उपसभापति द्वारा निर्वासित तिब्बती संसद के बारे में जानकारी दी गई, जिसके बाद उनको संसद भवन का भ्रमण कराया गया।

परम पावन दलाई लामा की दूरदर्शी सोच और तिब्बतियों को लोकतांत्रिक प्रणाली की उनकी महान आकांक्षा पर प्रकाश डालते हुए डिट्टी स्पीकर ने उन्हें निर्वासित तिब्बती संसद के विकास, कामकाज और संरचना के बारे में जानकारी दी। इसमें एक-दूसरे के मतभेदों का सम्मान करने और विचारों की विविधता को अपनाने के अवसर के बारे में भी जानकारी शामिल थी जो इसके विकास की विशेषता है।

डिट्टी स्पीकर ने निर्वासित तिब्बती संसद के अर्धवार्षिक सत्रों के बारे में विस्तार से बताया। इसमें मार्च सत्र के दौरान सामुदायिक जरूरतों के आधार पर बजट को प्राथमिकता दी जाती है और सितंबर के आम सत्र के दौरान कार्यकारी उपक्रमों की जांच पर जोर दिया जाता है।

तिब्बती संसद की समय-समय पर यात्राओं, पक्षधरता अभियानों, आउटरीच कार्यक्रमों और अन्य पहलों पर विस्तार से बताते हुए डिट्टी स्पीकर ने तिब्बत के उचित मुद्दे को दृढ़ समर्थन के लिए अमेरिका के लोगों और उसकी सरकार के प्रति विशेष रूप से अमेरिकी कांग्रेस में कई तिब्बत संबंधित बिल पारित करने के लिए गहरा आभार व्यक्त किया।

तिब्बती समाज में महिलाओं की ऐतिहासिक और समकालीन भूमिकाओं के बारे में बोलते हुए हुए, उपाध्यक्ष ने संसद में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के लिए परम पावन दलाई लामा के आरक्षण व्यवस्था के प्रावधान पर प्रकाश डाला, जिसने तिब्बती महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे उन्हें समुदाय के भीतर नेतृत्व की भूमिका निभाने में सक्षमता मिली और इसके काबिल बनाया गया है। इसमें केंद्रीय तिब्बती प्रशासन भी एक है।

अंत में, डिट्टी स्पीकर ने तिब्बत के उचित मुद्दे के लिए उनके अमूल्य योगदान और समर्थन के लिए आए मेहमानों को धन्यवाद दिया।

-तिब्बती संसदीय सचिवालय द्वारा तैयार रिपोर्ट

◆ १६. सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने तिब्बती धार्मिक केंद्रों को परम पावन १४वें दलाई लामा के पुनर्जन्म पर संकल्प अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया

वाशिंगटन डीसी। सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने ०७ अप्रैल २०२४ को विभिन्न बौद्ध धार्मिक केंद्रों के प्रतिनिधियों की एक बैठक टोरंटो स्थित तिब्बत-कनाडा सांस्कृतिक केंद्र में बुलाई। इस बैठक में उन्होंने परम पावन १४वें दलाई लामा के पुनर्जन्म के मुद्दे पर एक प्रस्ताव पारित करने और परम पावन की ९०वीं जयंती को पूरे एक वर्ष तक मनाने के कार्यक्रमों पर चर्चा कर एक संयुक्त बयान जारी करने को लेकर सहमति बनाने का प्रयास किया।

बैठक में प्रतिनिधि डॉ. नामग्याल चोएड्रुप के स्वागत भाषण के बाद सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने

२००७ के बाद से परम पावन दलाई लामा के पुनर्जन्म के मामले में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के बढ़ते हस्तक्षेप का मुद्दा उठाया। हालांकि, सितंबर २०११ में ही परम पावन ने अपने पुनर्जन्म के संबंध में आदरणीय उच्च लामाओं के साथ चर्चा कर योजना की घोषणा कर दी थी। सिक्योंग ने धार्मिक केंद्रों को चीन के हस्तक्षेप की निंदा करते हुए एक संयुक्त घोषणा-पत्र जारी करने के लिए प्रोत्साहित किया। सिक्योंग ने जोर देकर कहा कि बयान में इस बात का जिक्र होना चाहिए कि इस मुद्दे पर निर्णय लेना परम पावन का विशेषाधिकार है और परम पावन जो भी निर्णय लेते हैं उसका सम्मान किया जाना चाहिए। सिक्योंग ने दलाई लामा परंपरा की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए गाडेन फोडरंग संस्था के अधिकार के महत्व पर भी जोर दिया।

इसके अलावा, सिक्योंग ने परम पावन की ९०वीं जयंती पर कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए एक साल तक उत्सव आयोजित करने की कशाग की योजना में योगदान करने का भी आह्वान किया। यह जयंती उत्सव २०२५ में परम पावन के जन्मदिन से शुरू होकर अगले वर्ष के जन्मदिन तक चलेगा।

सिक्योंग द्वारा संबोधन समाप्त करने के बाद विभिन्न बौद्ध धार्मिक केंद्रों के प्रतिनिधियों ने सिक्योंग और कशाग के प्रयासों के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया।

-ओओटी वाशिंगटन डीसी द्वारा तैयार रिपोर्ट

◆ १७. स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल ने अयोध्या के राम मंदिर में दर्शन किया

अयोध्या। निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल ने अयोध्या में राम मंदिर में भगवान श्री राम का दर्शन किया। इस कार्यक्रम में कई प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। इससे २२ अप्रैल २०२४ के अवसर की प्रतिष्ठा और महत्व बढ़ गया।

स्पीकर ने इस कार्यक्रम के आयोजन के प्रति आभार व्यक्त किया और धार्मिक सद्भाव और वैश्विक शांति के साथ-साथ भारत और तिब्बत के बीच स्थायी मित्रता के लिए प्रार्थना की।

प्रतिभागियों ने तिब्बती मुद्दे, संस्कृति और धर्म के महत्व को रेखांकित किया।

- तिब्बती संसदीय सचिवालय की रिपोर्ट

◆ १८. ओंटारियो संसद ने तिब्बती नेता सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का स्वागत किया

- कनाडा तिब्बत समिति

टोरंटो, ०९ अप्रैल, २०२४। आज ०९ अप्रैल को क्वींस पार्क में एक महत्वपूर्ण अवसर पर 'ओंटारियो पार्लियामेंटरी फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत' ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के अध्यक्ष माननीय पेन्पा छेरिंग का विशिष्ट स्वागत किया। अंतरराष्ट्रीय एकजुटता और बहुसांस्कृतिक जुड़ाव के लिए यह सभा ओंटारियो विधानसभा के डिप्टी स्पीकर एमपीपी भुटिला कारपोछे द्वारा बुलाई गई थी।

कार्यक्रम की शुरुआत डिप्टी स्पीकर कारपोछे के परिचयात्मक संबोधन के साथ शुरू हुई, जहां उन्होंने तिब्बती समुदाय के समर्थन के लिए ओंटारियो विधानमंडल के अहम प्रयासों का विवरण दिया। इन प्रयासों में तिब्बतन हेरिटेज मंथ बिल (तिब्बती विरासत माह विधेयक), तिब्बती युवाओं के लिए वार्षिक इंटर्नशिप कार्यक्रम की शुरुआत और ओंटारियो विधानसभा में तिब्बती प्रतिनिधिमंडलों का स्वागत करने की परंपरा शामिल है। डिप्टी स्पीकर कारपोछे की मान्यता ने बहुसंस्कृतिवाद के प्रति ओंटारियो सरकार के गहन समर्पण और तिब्बती मुद्दे के प्रति उसके कट्टर समर्थन का इजहार किया।

तिब्बती नेता का अभिवादन करने के लिए भूटिला के साथ कई मंत्री और विधायक खड़े थे। इनमें विशेष रूप से नागरिकता और बहुसंस्कृतिवाद मंत्री माननीय माइकल फोर्ड थे। उन्होंने एक समावेशी समाज को बढ़ावा देने के लिए प्रांत की प्रतिबद्धता के बारे में बात की जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करता है। उपस्थित लोगों में विधायी मामलों, नगरपालिका मामलों और आवास मंत्री माननीय पॉल कैलेंड्रा, मानसिक स्वास्थ्य और व्यसन के एसोसिएट मंत्री माननीय माइकल टिबोलो, शिक्षा मंत्री माननीय स्टीफन लेसे, माननीय विधायक क्रिस्टिन वोंग-टैम और माननीय विधायक पैट्रिस बार्न्स भी शामिल थे।

मंत्रियों और विधायकों से बात करते हुए सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने तिब्बती लोगों के सपनों और कठिनाइयों के बारे में गहराई से जानकारी दी और ओंटारियो के समर्थन और व्यापक कनाडाई समाज के इससे जुड़ने पर प्रशंसा व्यक्त की। उन्होंने तिब्बत के लिए सदन में द्विदलीय सर्वसम्मत समर्थन की सराहना की और तिब्बत के संबंध में पीआरसी के ऐतिहासिक फर्जी कथानकों को चुनौती देने की महत्व की जरूरत को रेखांकित किया।

बैठक के बाद उपाध्यक्ष कारपोछे ने प्रश्नकाल के दौरान सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का स्वागत किया, जिससे विधानसभा के सभी सदस्यों ने खड़े होकर तालियां बजाते हुए समर्थन किया। सम्मान और मान्यता का यह भाव सिक्योंग के नेतृत्व और तिब्बती मुद्दे के लिए सभा के सामूहिक समर्थन की गहन स्वीकृति थी।

◆ १९. सिक्योंग ने ज्यूरिख में तिब्बती समुदाय को संबोधित किया, चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता की हालिया टिप्पणी को खारिज किया

ज्यूरिख। निर्वासित तिब्बती लोगों द्वारा लोकतांत्रिक रूप से चुने गए नेता सिक्योंग पेन्पा छेरिंग २८ अप्रैल २०२४ को अपने पांच देशों के दौरे पर निकले। उनके दौरे की शुरुआत ज्यूरिख से हो रही है। तिब्बत ब्यूरो जिनेवा के प्रतिनिधि थिनले चुक्की, उसके कर्मचारियों के अलावा स्विटजरलैंड और लिकटेंस्टीन के तिब्बती समुदायों के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के नेतृत्व में वहां के तिब्बती समुदाय के लोगों ने सिक्योंग का गर्मजोशी से स्वागत किया। सिक्योंगे वहां अपने दूसरे दौर की आधिकारिक यात्रा पर पहुंचे थे।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का पहला कार्यक्रम तिब्बत इंस्टीट्यूट रेकोन में रखा गया था। यहां उन्होंने रिकॉन के अध्यक्ष डॉ. कर्मा डोल्मा लोबसांग, प्रबंध निदेशक पीटर ओबरहोल्ज़र, मठवासी समुदाय के प्रतिनिधि भिक्षु लामा तेनज़िन जोत्तोत्शां, महंत भिक्षु गेशे तेनज़िन जांगचुप, तिब्बत ब्यूरो जिनेवा के प्रतिनिधि और स्विट्जरलैंड और लिकटेंस्टीन के तिब्बती समुदाय के अध्यक्ष के साथ बैठक की।

बाद में सिक्योंग ने डायटिकॉन में तिब्बती समुदाय के साथ बातचीत की, जिसमें सप्ताहांत में चलनेवाले तिब्बती भाषा के स्कूल के शिक्षकों और प्रमुखों के साथ संक्षिप्त बातचीत भी शामिल थी।

तिब्बती समुदाय के बीच अपने संबोधन में सिक्योंग ने नई पीढ़ियों से तिब्बती मुक्ति साधना को साधे रखने के लिए अच्छी तरह से स्थापित लोकतांत्रिक प्रणाली के साथ इस अद्वितीय निर्वासित समुदाय की स्थापना के लिए परम पावन दलाई लामा और बुजुर्ग तिब्बतियों के समर्पित योगदान को याद करने और सराहना करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा 'उनकी विरासत को कायम रखें'।

तिब्बतियों की स्वतंत्रता की खोज में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के निरंतर अस्तित्व और प्रासंगिकता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए तिब्बती राजनीतिक नेता ने कहा, 'चूंकि हम अनिश्चित हैं कि परम पावन के स्तर का प्रभाव और उन जैसा प्रभाव वाला कोई व्यक्ति सत्ता संभालेगा या नहीं, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए इस संस्था को कायम रहना चाहिए।'

सिक्योंग ने सभा को केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के संचालन को सक्षम और मजबूत करने के लिए १६वें कशाग के आधिकारिक उपक्रमों से भी अवगत कराया। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के बीच परदे के पीछे चल रहे संपर्क अभियान पर चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता द्वारा की गई हालिया टिप्पणी पर तिब्बती राजनीतिक नेता ने जोर देकर कहा, 'तिब्बत-चीन संघर्ष के समाधान के लिए बातचीत ही एकमात्र रास्ता है।' केंद्रीय तिब्बती प्रशासन सरकार और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से चीनी सरकार से बातचीत फिर से शुरू करने का आग्रह करने की अपनी मांग जारी रखेगा।

इस संबंध में सिक्योंग ने चीनी सरकार से परम पावन दलाई लामा और तिब्बती नेताओं को क्या करना है या क्या नहीं करना है, इसके निर्देश देने के बजाय तिब्बत के भीतर रचनात्मक सुधार शुरू करने का आग्रह किया।

सिक्योंग २९ अप्रैल को राजधानी बर्न में स्विस सांसदों से मुलाकात करने वाले हैं।

◆ २०. बेल्जियम की संघीय संसद ने पंचेन लामा की तत्काल रिहाई का आह्वान किया

ब्रुसेल्स। परम पवित्र ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा के ३५वें जन्मदिन के अवसर पर बेल्जियम की संघीय संसद की विदेश मामलों की समिति के अध्यक्ष एल्स वान होफ और उपाध्यक्ष सैमुअल कोगोलती ने एक संयुक्त बयान जारी किया।

अपने बयान में उन्होंने ११वें पंचेन लामा के २९ साल से जबरन गायब कर अज्ञात में रखने की निंदा की है और उनके परिवार, शिक्षक और अन्य राजनीतिक कैदियों के साथ उनकी तत्काल रिहाई का आह्वान किया है।

उन्होंने चीनी अधिकारियों से तिब्बती लोगों के धर्म की स्वतंत्रता के अधिकार और परम पावन १४वें दलाई लामा सहित उनके धार्मिक नेताओं के पुनर्जन्म का चयन करने के अधिकार का सम्मान चीनी सरकार के हस्तक्षेप के बिना करने का भी आह्वान किया है।

सांसदों के समर्थन वाले ऐसे बयान बेहद महत्वपूर्ण हैं क्योंकि गेधुन चोएक्यी न्यिमा का मामला तिब्बती लोगों की निरंतर पीड़ा और मौलिक मानवाधिकारों के लिए चीन की पूर्ण उपेक्षा को दर्शाता है।

परम पावन दलाई लामा द्वारा १९९५ में पंचेन लामा का पुनर्जन्म घोषित किए जाने के तीन दिनों के भीतर ही गेधुन चोएक्यी न्यिमा का चीनी अधिकारियों द्वारा अपहरण कर लिया गया था और तब से उन्हें सुना या देखा नहीं गया है।

-तिब्बत कार्यालय, ब्रुसेल्स द्वारा तैयार रिपोर्ट

◆ २१. स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल लामा लोबजांग की शोकसभा में शामिल हुए

नई दिल्ली। आईबीसी के संस्थापक महासचिव आदरणीय लामा लोबजांग को सम्मानित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) द्वारा ०९ अप्रैल, २०२४ को नई दिल्ली के जनपथ पर स्थित आईजीएनसीए भवन के समवेत सभागार में शोकसभा आयोजित की गई थी।

कार्यक्रम के दौरान परम पावन दलाई लामा का एक शोक पत्र पढ़ा गया और आईबीसी सदस्यों और आदरणीय लामा लोबज़ांग को जानने वाले अन्य लोगों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल और सुरक्षा विभाग (सीटीए) के कलोन ग्यारी डोलमा लद्दाख के गणमान्य व्यक्तियों और १०० से अधिक आम नागरिकों के साथ नई दिल्ली की शोकसभा में शामिल हुए।

-तिब्बती संसदीय सचिवालय द्वारा तैयार

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Acting Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
कार्यवाहक समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः coordinator@indiatibet.net

April, 2024, Years: 45 Issue: 04 Regd No. : RNI 34636-79

अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) द्वारा आईबीसी के संस्थापक महासचिव आदरणीय लामा लोबजांग के सम्मान में आयोजित शोक सभा

स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल ने सरयू घाट 'आरती' पूजा कार्यक्रम में भाग लिया

एस्टोनियाई संसद के सदस्य और इसके पूर्व अध्यक्ष हेन पोलुआस, प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान संबोधित करते हुए।

सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग डायबिकॉन पहुंचे